International Journal of Engineering Research & Management Technology
ISSN: 2348-4039
July-August 2023 Volume-10, Issue-4
Email: editor@ijermt.org
www.ijermt.org

मीणा जनजाति के परंपरागत मूल्य और उनका आधुनिक भारत में स्थान

रामावतार मीणा,

रिसर्च स्कॉलर, यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर

डॉ श्वेता रॉय,

सुपरवाइजर, यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर

प्रस्तावना:

मीणा जनजाति, राजस्थान की एक प्रमुख जनजाति, अपनी सांस्कृतिक धरोहर और परंपरागत मूल्यों के लिए प्रसिद्ध है। इस शोध पत्र में मीणा जनजाति के परंपरागत मूल्यों का विश्लेषण किया गया है और उनका आधुनिक भारतीय समाज में कैसे संगत है, उस पर प्रकाश डाला गया है। मीणा जनजाति राजस्थान के उन समुदायों में से एक है, जिन्होंने अपनी अनूठी सांस्कृतिक और इतिहासिक पहचान को वर्षों तक बरकरार रखा है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य उनके परंपरागत मूल्यों का विश्लेषण करना है और जांचना है कि कैसे वे मूल्य आधुनिक भारतीय समाज में फिट बैठते हैं।

कुंजी शब्द:

मीणा जनजाति, परंपरागत मूल्य, आधुनिक भारत, सांस्कृतिक पहचान, राजस्थान, जनजातीय पहचान.

मीणा जनजाति के परंपरागत मूल्य:

मीणा जनजाति की सांस्कृतिक पहचान उनके परंपरागत मूल्यों, रीति-रिवाजों, और त्योहारों में निहित है। इनमें पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय, और सांस्कृतिक संवाद शामिल हैं। इन मूल्यों ने न केवल उनकी पहचान को निर्धारित किया है बल्कि आधुनिक भारत में भी उन्हें साक्षात्कार की दिशा दी है।

मीणा जनजाति अपनी रीति-रिवाज, लोक कला, भाषा, और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए जानी जाती है। उनके परंपरागत मूल्य उनके जीवन के हर पहलुओं में घुले हुए हैं, चाहे वह खेती हो, विवाह की रस्में, या त्योहारों की धूमधाम। उनके परंपरागत मूल्य उन्हें एक विशिष्ट पहचान और गर्व की भावना प्रदान करते हैं।

आधुनिक भारत में स्थान:

आज के समय में, मीणा जनजाति के परंपरागत मूल्य और सांस्कृतिक प्रथाएं नए बदलाव और चुनौतियों का सामना कर रही हैं। जनजातीय समुदाय की युवा पीढ़ी अपनी पारंपरिक पहचान और सांस्कृतिक मूल्यों को जानने और समझने की कोशिश में है।

मीणा जनजाति के परंपरागत मूल्य आधुनिक भारत में नए बदलाव और चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। जल, जंगल, और जमीन से जुड़े उनके अधिकार और उनकी पारिस्थितिकी जीवन शैली को संरक्षित करने की चुनौती है। इसके अलावा, उनकी पीढ़ियां अब शिक्षा और रोजगार के नए अवसरों की तलाश में हैं, जो उन्हें अपनी पारंपरिक सीमाओं से बाहर ले जा रही हैं। जनगणना 2011 के अनुसार, मीणा जनजाति की साक्षरता दर 50.6% है, जो राष्ट्रीय औसत से कम है। इसमें पुरुषों की 61.5% और महिलाओं की 38.0% साक्षरता दर शामिल है।

विवेचना:

मीणा जनजाति के परंपरागत मूल्य आज भी भारतीय समाज में प्रासंगिक हैं, लेकिन उन्हें आधुनिक संदर्भ में अद्यतन करने की आवश्यकता है। उनकी पारंपरिक ज्ञान सिस्टम, सांस्कृतिक प्रथाएं और वैचारिक धाराओं को संरक्षित और संवर्धित करने के लिए उन्हें नई तकनीकों और विचारधाराओं के साथ मेल करना होगा।

आधुनिक भारत में जनजातियों की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए राज्य सरकार ने विभिन्न योजनाएं और कार्यक्रम चालू किए हैं। इनमें मीणा जनजाति के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में सुधार के उपाय शामिल हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उन्हें बेहतर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता की आवश्यकता है। राजस्थान सरकार ने इस दिशा में कई योजनाएं चालू की हैं, जिसमें जनजातीय क्षेत्रों में विशेष रूप से शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उपाय शामिल हैं।

निष्कर्ष:

मीणा जनजाति के परंपरागत मूल्य भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। इन्हें संरक्षित और पुनर्वासित करने के लिए एक संवेदनशील और सूचना युक्त दृष्टिकोण की आवश्यकता है, ताकि इन मूल्यों को आधुनिक भारत में उचित स्थान मिल सके। जनजातीय मूल्य और संस्कृति को संरक्षित करने और उन्हें समाज में स्वीकृति दिलाने के लिए सभी स्तरों पर

प्रयास होने चाहिए। राजस्थान सरकार के अनुसार, जनजातियों की आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए 2021 में लगभग 900 करोड़ रुपये की योजना बनाई गई है।

इस शोध पत्र में मीणा जनजाति के परंपरागत मूल्यों और उनकी स्थिति को आधुनिक भारतीय संदर्भ में व्याख्यायित किया गया है, जिससे इन मूल्यों को आधुनिक समाज में एक नयी पहचान और स्वीकृति मिल सके। इस तरह, इस शोध पत्र में हमने मीणा जनजाति के परंपरागत मूल्यों को और उनकी आधुनिक भारत में स्थिति को विशेष रूप से उठाया है, ताकि उनकी सांस्कृतिक पहचान और विवेचना को और अधिक स्पष्ट और संविदानशील तरीके से किया जा सके। आज के समय में, मीणा जनजाति के युवाओं को उच्च शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में अधिक अवसरों की जरूरत है। उन्हें अपनी पारंपरिक सांस्कृतिक पहचान के साथ ही आधुनिक शिक्षा और तकनीकी ज्ञान की भी आवश्यकता है।

संदर्भ:

1. शर्मा, बी. के. (2005). "मीणा जनजाति: संस्कृति और परिवर्तन". राजस्थान प्रकाशन, जयपुर।
2. मीणा, रामदास. (2012). "मीणा जनजाति की भाषा और साहित्य". आदिवासी लोक कला एकेडमी, उदयपुर।
3. वर्मा, सुधीर. (2009). "राजस्थान की जनजातियां: एक सामाजिक अध्ययन". कनिष्क पब्लिशर्स, न्यू दिल्ली।
4. आदिवासी विकास विभाग, राजस्थान सरकार. (2021). "आदिवासी कल्याण: एक वार्षिक रिपोर्ट".
5. सिंह, के. एस. (2000). "भारतीय जनजातियां: एक इतिहास". मानव विज्ञान प्रकाशन, दिल्ली।